भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-19 अंक-4 वि. स. 2080 युगाब्द 5125 जून-2023 वार्षिक चंदा 200/- मूल्य प्रति - 20/-

सदस्यता शुल्क : 12 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर
लखनऊ-226020
दूरभाष : 0522-4001837,
मोबाइल : 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

12/604, CWG Village,
Patparganj, N. Delhi-110092
E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
011-43306517, 9811068375

आलोक : प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

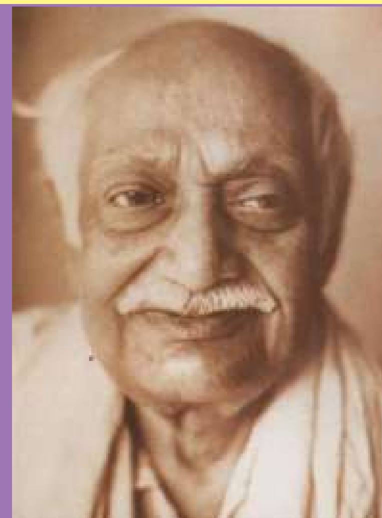

जन्म- 7 सितम्बर 1887 पुण्यतिथि - 12 जून 1976

गोपीनाथ कविराज

स्वाध्याय साधना रत, संस्कृत के विद्वान।
योग तंत्र लिपि न्यायविद्, अनुपम परम सुजान।।
गोपिनाथ कविराज का, जग प्रसिद्ध है नाम।
भक्ति भाव से हम करें, आदर सहित प्रणाम।।

\- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक, आजीवन सदस्य एवं अन्य पाठकगण

आपकी पत्रिका सेवा संवाद डिजिटल रूप में भी प्रकाशित की जा रही है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

यदि आप सेवा संवाद के ग्राहक नहीं हैं तो आप से अनुरोध है कि आप जल्द से जल्द सदस्यता लें और अपने मित्रों को भी सदस्यता दिलाएं।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा** - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा सेवा** - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. **विकलांग सहायता सेवा** - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)**- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति**- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक: रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.): रु 5,000, हाईस्कूल: रु 7,000, इण्टरमीडिएट: रु 8000, आई.टी.आई./डिप्लोमा एवं स्नातक: रु 10,000, परास्नातक: रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु: रु 15,000, इंजीनियरिंग: रु 18,000 और मेडिकल: रु 20,000 वार्षिक।
6. **सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका)** - रु. 2,000 की आजीवन (10 वर्षीय) सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद (मासिक)** - रू. 2,000 की 12 वर्षीय एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।।
8. **माधव सेवा आश्रम** - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. **विश्राम सदन दिल्ली** - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतु अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. **अक्षय सेवा** - दिल्ली में एम्स एवं तीन अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. **CSR फंड** - यदि आपकी फर्म CSR के अंतर्गत भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें।

दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं:

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय अथवा जीवन का कोई भी क्षेत्र हो त्याग एवं संन्यास की भावना की अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि यदि मानवता की सर्वोच्च आकांक्षाओं का पोषण किया जाना है, यदि मनुष्य को परम सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है, सत्य सनातन शाश्वत सत्य को जीवित रखना है तथा इस ज्ञानालोक का प्रसार करना है; यदि मनुष्य को भगवद्-अनुभव प्राप्त करना है, इसकी महत्ता को अपने व्यक्तिगत उदाहरण से प्रकट करना है तथा मानवता की नि:स्वार्थ सेवा करनी है, तो संन्यासाश्रम की व्यवस्था को बनाये रखना अत्यावश्यक है। संभवतः इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रख कर प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा नर को नारायण बनाने, मोक्ष प्रदान करने की दिशा में, व्यक्ति के जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों में विभक्त कर आश्रम व्यवस्था की स्थापना की गई थी।

ब्रह्मचर्य आश्रम (जन्म से 25 वर्ष) में व्यक्ति को मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य के विषय में ज्ञान प्रदान कर जीवन की एक आधारशिला निर्मित कर, उसे सिखाया जाता है कि धर्म एवं अधर्म क्या हैं, सत्य क्या है तथा आत्मसंयमपूर्ण जीवन किस प्रकार व्यतीत किया जाये जिससे कि वह जीवन की अगली सीढ़ी पर उत्तरोत्तर अग्रसर हो सके। ब्रह्मचर्य आश्रम में ग्रहण किये गये समस्त महान् आदर्शों एवं शिक्षाओं के अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक जीवन गृहस्थाश्रम (26 से 50 वर्ष) में समुचित अभ्यास किया जाता है। एक गृहस्थ विविध आसक्तियों के मध्य अनासक्त भाव से संसार में रहते हुए संसार से नहीं बँधने हेतु स्वयं को प्रशिक्षित करने का प्रयास करता है। स्वार्थ रहित हो कर धनार्जन के लिए अथक प्रयत्नशील रहने का भी प्रयास करता है। जब मनुष्य विकास की सीढ़ी पर एक और कदम आगे बढ़ाता है, तो वह तीसरे 'वानप्रस्थ (51 से 75 वर्ष) आश्रम' में आत्मसंयम एवं वैराग्य से पूर्ण एक आदर्श जीवन व्यतीत करते हुए, अहंकार, स्वार्थरहित, नैतिक पूर्णता के उच्च स्तर को बनाए रखने का प्रयास करता है। उसके बाद जीवन का चतुर्थ चरण संन्यास-आश्रम (76 से 100 वर्ष) आता है, जहाँ लोग सन्यास की दीक्षा ग्रहण कर सन्यासी बन जाते हैं। प्रत्येक धर्म में संन्यासी होते हैं जो एकान्तवास एवं ध्यान का जीवन व्यतीत करते हैं।

ये संन्यासी ही हैं जो विश्व के धर्मों को सुरक्षित बनाये रखते हैं। संन्यासी ही दुःख, कष्ट से पीड़ित गृहस्थजनों को शान्ति एवं सान्त्वना प्रदान करते हैं। ये जन-जन को जीवन का वास्तविक अभिप्राय समझाते हैं तथा उनके जीवन को दिव्य आनन्द से भर देते हैं। संन्यासीजन मानव की आध्यात्मिक आकांक्षा, परम सत्य के साक्षात्कार एवं उसके अद्भुत परिणामों के महान् उदाहरण-स्वरूप होते हैं। वे औपनिषदिक ज्ञान, अध्यात्म विद्या, आत्म-ज्ञान एवं शान्ति के सन्देशवाहक होते हैं। एक संन्यासी के लिए आत्मा का सम्बन्ध ही सच्चा सम्बन्ध होता है। वह सर्वत्र एकमेव अद्वितीय आत्मा का अनुभव करता हुआ स्वयं को सम्पूर्ण विश्व से सम्बन्धित मानता है तथा मानवता की सेवा करता है। उसका त्याग नकारात्मक नहीं है, अपितु यह संसार की वस्तुओं एवं जीवन के उचित बोध पर आधारित है। उसका संसार के प्रति व्यवहार अनासक्त सेवा के भाव से प्रेरित होता है। एक वास्तविक संन्यासी ही इस धरा का सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट् है। वह किसी से कुछ नहीं लेता है, सदैव दूसरों को देता ही रहता है। संन्यासियों ने ही भूतकाल में महान् एवं भव्य कार्य किये। वे ही वर्तमान काल एवं भविष्य में चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। जब तक संसार का अस्तित्व है, आदि शंकराचार्य का नाम विस्मृत नहीं किया जा सकता है। ये रामकृष्ण परमहंस देव, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने शास्त्रों के दिव्य सदुपदेशों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया तथा हिन्दू धर्म का संरक्षण किया। केवल एक संन्यासी ही वास्तविक लोककल्याण कर सकता है क्योंकि वह दिव्य ज्ञान से सम्पन्न है तथा उसके पास पर्याप्त समय है। एक सच्चा संन्यासी सम्पूर्ण विश्व की नियति को बदल सकता है। दिव्य ज्ञान के भण्डार, परम सत्य के पथप्रदर्शक, विश्व के प्रकाशस्तम्भ, आध्यात्मिक भवन की आधारशिला तथा शाश्वत धर्म के आधारस्तम्भ संन्यासीजन विश्व के विभिन्न राष्ट्रों का मार्गदर्शन करें जिससे सम्पूर्ण मानवता की रक्षा और जन कल्याण हो सके इसी आशा आकांक्षा के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

@ शिव

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

ऋषिकेश में निर्माणाधीन माधव सेवा विश्राम सदन का निर्माण कार्य जोर-शोर से चल रहा है। मई माह में तीसरे तल की छत डालने का कार्य प्रारम्भ हो गया। दो तिहाई हिस्से की छत डालने के साथ साथ ही शेष भाग की तैयारी भी चल रही है और आशा है कि 15 जून के आस-पास यह पूर्ण हो जाएगा। निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु समय समय पर स्थानीय कार्यकर्ताओं का आगमन भी होता रहता है। इस भवन के वास्तुकार के दल द्वारा समय समय पर कार्य का निरीक्षण किया जाता है। 26 मई को भी उनका दल इस कार्य हेतु उपस्थित था। उन्होंने कार्य की प्रगति को देखते हुए आवश्यक दिशानिर्देश दिए। उनके साथ स्थानीय कार्यकर्ता डॉ विनोद, श्री कपिल गुप्ता व अन्य भी उपस्थित थे।

26 मई को ही न्यास के न्यासी श्री नंदकिशोर गर्ग जी का आगमन भी हुआ। उन्होंने निर्माण कार्य की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। उनका पहले भी निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु आना हुआ है।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राजेश अग्रवाल जी (Micromax, Delhi) और श्री राजीव अग्रवाल जी (Goel Industries) हापुड़ ने ऋषिकेश में निर्माणाधीन माधव सेवा विश्राम सदन का भ्रमण किया। निर्माण कार्य की प्रगति एवं कार्य कुशलता पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। आप दोनों की ओर से इस भवन के निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग भी न्यास को मिलता ही रहता है।

आप के आने से प्रकल्प और न्यास के कार्यकर्ताओं को मानसिक संबल भी मिलता है। आप दोनों का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

न्यास के कोषाध्यक्ष के छोटे भाई और न्यास की वित्त समिति के संयोजक श्री विनोद किला जी अपने परिवार व अन्य साथियों के साथ नीलकंठ की यात्रा से लौटते समय ऋषिकेश में निर्माणाधीन माधव सेवा विश्राम सदन के निर्माण कार्य का अवलोकन करने पहुंचे। सभी ने घूम कर निर्माण कार्य को देखा और उसकी भूरी भूरी प्रशंसा की।

आप जैसे आने वाले आगंतुकों के कारण इस सदन की निर्माण समिति को नई ऊर्जा मिलती है।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या **CSR00004454**
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या **AAATB1049GF20217**
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या **136550134**

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

अक्षय सेवा प्रकल्प को प्रारम्भ हुए छह वर्ष बीत चुके हैं और यह प्रकल्प उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। वर्तमान में दिल्ली के 4 प्रमुख अस्पतालों के निकट प्रतिदिन दोपहर का भोजन वितरित किया जाता है। अनेक दिव्यांग भी प्रतिदिन यहाँ भोजन पाने के लिए आते हैं।

प्रतिदिन होने वाले भोजन वितरण में चावल के साथ कोई दाल, मिक्स दाल, छोले, राजमा या कढ़ी का वितरण किया जाता है। जब आलू की सब्जी का वितरण होता है तो साथ में दही का वितरण भी किया जाता है। कभी कभी तो पनीर की सब्जी या आलू पूरी हलवा का भी वितरण किया जाता है।

अनेक समाजसेवी महानुभाव जैसे एम्स के अधिकारी व वरिष्ठ चिकित्सक, अन्य पेशेवर, उद्यमी आदि समय समय पर स्वयं या परिवार सहित आकर अपने हाथों से भोजन वितरण का पुनीत कार्य करते हैं। कुछ महानुभावों ने तो नियमित रूप से मास में एक से तीन बार तक आने का तय किया हुआ है। ऐसे महानुभावों का यह कार्य न्यास और अक्षय सेवा प्रकल्प के कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होता है।

सुन्दर सिंह भंडारी (जन्म 12 अप्रैल 1921 - मृत्यु 22 जून, 2005)

श्री सुन्दर सिंह भंडारी का जन्म उदयपुर में हुआ था। विद्यार्थी जीवन में ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आ गये थे। देश की पुकार पर वे राजस्थान में प्रचारक बन गये। भारतीय जनसंघ की स्थापना के समय दीन दयाल उपाध्याय जी और नाना जी देशमुख के साथ भण्डारी जी को भी काम में लगा दिया गया। 1960 में दीन दयाल जी की हत्या की बाद उन्हें जनसंघ का राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनाया गया। अनेक वर्ष तक संगठन मंत्री का दायित्व निभाने के बाद वे दल के उपाध्यक्ष बने। आपातकाल के विरुद्ध हुए संघर्ष में वे भूमिगत रहकर काम करते रहे। पकड़े जाने पर जेल में उन्होंने अपनी सादगी, विनम्रता और वैचारिक स्पष्टता से विरोधियों का मन भी जीत लिया। 1980 में 'भारतीय जनता पार्टी' के गठन के बाद उसका संविधान उन्हीं की देखरेख में बना।

पुण्य स्मृति : श्रद्धेय भाऊराव देवरस

आज अपने न्यास के प्रेरणास्त्रोत श्रद्धेय भाऊराव देवरस की पुण्यतिथि है। उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण करते हुए न्यास ने लगभग 30 वर्षों की यात्रा पूर्ण की है। आगे भी उसी मार्ग पर चलते हुए वर्तमान व भविष्य के विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से न्यास अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के मार्ग पर बढ़ता रहे यही स्व भाऊराव देवरस जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उस पुण्यात्मा के चरणों में शत शत नमन

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

हमारे प्रेरणा स्त्रोत : श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी

एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी का जन्म वर्ष 1917 में नागपुर में हुआ। वे बचपन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार जी के संपर्क में आ गए थे। 1937 में संघ-कार्य के विस्तार के लिए उन्हें उत्तरप्रदेश भेजा गया जहां उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। अपने संगठन कौशल्य और नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए वे विश्वविद्यालय के छात्र संघठन के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने उस कालखंड में युवाओं के हृदय सम्राट नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को उद्घाटन कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया।

वे बी.कॉम एवं एल.एल.बी. में प्रथम रहे और उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत उन्होंने अपना शेष जीवन समाज कार्य में लगाने का तय किया। संघ में अनेक दायित्व संभालते हुए उन्होंने सह-सरकार्यवाह के रूप में हम सभी का मार्गदर्शन किया। समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की।

1992 में उनके निधन के पश्चात कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं ने उनके लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए भाऊराव देवरस सेवा न्यास का गठन किया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी इसके संस्थापक अध्यक्ष थे। लखनऊ में स्थापित इस न्यास का गठन 29 दिसंबर 1993 को हुआ।

न्यास का मुख्य उद्देश्य सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बंधुओं की शिक्षा व स्वास्थ्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उनका स्तर सुधारना और उन्हें समाज के अन्य बंधुओं के समकक्ष लाने का प्रयास करना है। इस दृष्टि से न्यास ने समय समय पर अनेक प्रकल्प प्रारम्भ किये।

इन्ही प्रकल्पों के माध्यम से न्यास अपने लक्ष्य की पूर्ति करने की ओर अग्रसर है। समय समय पर अनेक नए प्रकल्प भी जोड़े गए हैं जो इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होंगें।

झज्जर, हरियाणा में साधारण सभा

भाऊराव देवरस सेवा न्यास की साधारण सभा का आयोजन चार वर्ष पश्चात हरियाणा के झज्जर स्थित विश्राम सदन में 10 मई को हुआ। उससे पूर्व न्यासी मंडल और न्यास द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न प्रकल्पों के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक दिल्ली में 9 मई को आयोजित हुई। इन दो दिनों में न्यास के कार्यों पर विस्तृत चर्चा हुई। इन बैठकों में आये कुछ प्रमुख बिंदु नीचे दिए गए हैं।

बैठक बिंदू 09 मई (दिल्ली में)

न्यास के संस्थापक न्यासी माननीय डॉ कृष्ण गोपाल जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह, की उपस्थिति और न्यास के अध्यक्ष माननीय ओमप्रकाश गोयल जी की अध्यक्षता में न्यास के सचिव श्री राहुल सिंह जी ने बैठक के प्रथम सत्र का संचालन किया। कुल 39 कार्यकर्ता बैठक कक्ष में उपस्थित रहे।

श्री राहुल सिंह जी ने कुछ बिन्दुओं पर सबका ध्यान आकृष्ट किया, जैसे - हम सेवा कार्य अपने आनंद के लिए करते हैं – यह भाव हम सभी के मन में रहना चाहिए; हर प्रकल्प में – आगे क्या का भाव भी रहे; आम जनता को कार्यक्रम में बुलाने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन जैसे, कथा / भोजन आदि। उन्होंने बताया कि न्यास के कुल 17 प्रकल्प और 04 कार्यक्रम चल रहे हैं। बैठक में 15 प्रकल्पों के 25 कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डॉ कृष्णगोपाल जी ने कहा कि संस्था/संगठन/ न्यास एक सजीव इकाई है। सजीव इकाई में बढ़ने/घटने की प्रकृति होती है। देश, समाज और अपने हिन्दू समाज को ध्यान में रखकर अपना काम बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे अन्दर समाज का दु:ख और समस्या को देखने की दृष्टि होनी चाहिए। फिर उन समस्याओं का समाधान निकालना जिसके लिए अच्छे लोगों को जोड़ना और उनकी टीम बनाना। इस टीम को नियमित रूप से बैठना और सर्व सम्मति से निर्णय लेना चाहिए।

बैठक बिंदू 10 मई (झज्जर), प्रातः 9 बजे

दीप प्रज्वलन और मन्त्रोचारण से बैठक प्रारम्भ हुई। माननीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी ने संक्षेप में न्यास का परिचय दिया। इसके बाद प्रत्येक प्रकल्प के प्रमुख कार्यकर्ता ने अपने प्रकल्प की पिछले वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी, वृत्त निवेदन किया और अगले वर्ष के लक्ष्य के विषय में बताया। कुल 16 प्रकल्पों द्वारा अपनी प्रस्तुति दी गई।

इसके बाद श्री राहुल सिंह जी ने प्रकल्पों के अतिरिक्त न्यास की वर्ष भर की गतिविधियों की जानकारी दी। न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला जी ने सभी प्रकल्पों के लिए अर्थ संबंधी नियमावली को विस्तार से समझाया।

इस वर्ष न्यास के नए प्रकल्प, पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण द्वारा विभिन्न स्थानों पर 25 हजार पेड़ लगाने की योजना है। एक विषय आया कि हमारे एवं अन्य विश्राम सदनों में अंतर दिखे, वहाँ संस्कार का वातावरण हो। सभी प्रकल्पों को प्लास्टिक मुक्त करने की आवश्यकता है, ऐसा विचार आया। प्रत्येक प्रकल्प को सामाजिक सहयोग अधिक से अधिक हो ऐसा प्रयास करना। विश्राम सदनों / प्रकल्पों में पानी के संरक्षण की जानकारी देना और पालन हेतु प्रेरित करना चाहिए। साबुन का उपयोग भी कम करना चाहिए ऐसी जानकारी देना।

अंत में कल्याण मन्त्र के साथ बैठक समाप्त हुई।

समर्थ भारत - दिल्ली

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर युवाओं को अलग-अलग विधाओं का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाने का कार्य समर्थ भारत द्वारा पिछले 2 वर्षों से किया जा रहा है। इसके माध्यम से सैकड़ों युवा लाभान्वित हो चुके हैं और उनमें से अनेकों ने अपना स्व-रोजगार भी प्रारम्भ किया है। मई 2023 में समर्थ भारत में विभिन्न केन्द्रों की गतिविधियों की जानकारी नीचे दी गई है।

- **ब्लॉक 31 एक्स्ट्रा त्रिलोकपुरी प्रशिक्षण केंद्र – सिलाई और कटिंग** - इस केंद्र पर प्रशिक्षार्थियों द्वारा नया प्रयोग किया गया है। उन्होंने पुराने बैनर से थैले बनाए और कचरा प्रबंधन द्वारा धरती को बचाने में सहायक हुए।
- **ब्लॉक 36 त्रिलोकपुरी प्रशिक्षण केंद्र - ए सी और रेफ्रीजिरेटर कोर्स** - इस केंद्र पर दूसरे बैच का एक माह का प्रशिक्षण 8 मई को प्रारंभ हुआ जिसमें 6 प्रशिक्षार्थी हैं। प्रशिक्षक श्री बसंत जी हैं।

- **आई एन ए प्रशिक्षण केंद्र - ए सी और रेफ्रीजिरेटर कोर्स** - ए सी और रेफ्रीजिरेटर के दूसरे बैच का एक माह का प्रशिक्षण 16 मई को प्रारंभ हुआ जिसमें 14 प्रशिक्षार्थी हैं। प्रशिक्षक श्री संजीव जी हैं।
- **मधु विहार प्रशिक्षण केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स** – यहाँ चल रहे पहले बैच के तीन माह के प्रशिक्षण में इस माह के विषय – फेस मसाज, फेस पैक, फेसिअल, मेहंदी आदि।
- **पहाड़गंज प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – बेसिक कम्पूटर कोर्स** - इस केंद्र पर तीन माह के पहले बैच का प्रशिक्षण 8 मई से प्रारंभ हुआ जिसमें 15 प्रशिक्षार्थी हैं। प्रशिक्षक श्री रोहन सिंह जी हैं।
- **ब्यूटिशियन कोर्स** - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के पहले बैच का तीन माह का प्रशिक्षण 1 मई से प्रारंभ हुआ जिसमें 10 प्रशिक्षार्थी हैं। प्रशिक्षक श्रीमती निशा गोला जी हैं।

- **संगमविहार प्रशिक्षण केंद्र** – इस केंद्र पर ए सी और रेफ्रीजिरेटर का पहले बैच का प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ है। प्रशिक्षक श्री निर्मल जी हैं।
- **सिग्नेचर ब्रिज प्रशिक्षण केंद्र** – इस केंद्र पर ए सी और रेफ्रीजिरेटर का एक माह का प्रशिक्षण 6 मई को प्रारंभ हुआ है जिसमें 6 प्रशिक्षार्थी हैं। प्रशिक्षक श्री संजीव जी हैं।
- **प्रमाणपत्र वितरण** - इसी केंद्र पर जो स्मार्टफोन रिपेयर का पहला बैच हुआ था जिसमें 11 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण पूर्ण किया। उन्हें समर्थ भारत की तरफ से प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

- सुल्तानपुरी प्रशिक्षण केंद्र - इस केंद्र पर सिक्ख समाज के सिकलीगर समुदाय के बीच ए सी और रेफ्रीजिरेटर का पहले बैच का प्रशिक्षण 1 मई को प्रारंभ हुआ जिसमें 23 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षक श्री नकुल जी रहे। इस केंद्र पर 29 मई को प्रात: 6.30 बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्री भारत भूषण जी का प्रवास रहा।
- अपस्किल क्लास – एक नए प्रयोग के अंतर्गत सड़क किनारे बैठकर नाई का कार्य करने वाले नाइयों के लिए अप स्किल प्रशिक्षण शुरू किया गया। दक्षिणी दिल्ली में नेब सराय और मध्य दिल्ली में पहाड़गंज केंद्र पर यह कक्षा साप्ताहिक और केवल एक माह के लिए की गयी। प्रशिक्षक थे श्री सागर राव जी। इसका उद्देश्य उनके कौशल में वृद्धि कर उनकी आमदनी को बढ़ाना है।
- 28 मई को समर्थ भारत के मालवीय नगर प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षार्थियों द्वारा एक शादी समारोह में मेहंदी लगाई गई।

उपाधि नहीं व्याधि

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी से जुड़ा किस्सा है। एक दिन उन्होंने गृहमंत्री गोविंद वल्लभ पंत को बुलाया और उनसे कहा, 'मैं आपको एक पत्र दे रहा हूं, आप इस पत्र को ले जाइए और बहुत ही सम्मान से गोरखपुर में गीता प्रेस के संस्थापक हनुमान प्रसाद पोद्दार जी को ये पत्र देना।'

पोद्दार जी को भाईजी के नाम से भी जाना जाता था। राष्ट्रपति जी की बात सुनकर पंत जी ने पूछा, 'इस पत्र में ऐसा क्या लिखा है, एक राष्ट्रपति एक व्यक्ति को ऐसा पत्र दे रहा है।'

राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा, 'भाईजी अनूठा काम कर रहे हैं। उन्होंने गीता प्रेस के माध्यम से और धार्मिक साहित्य की मदद से जो जन जागरण का काम किया है, वह बहुत ही अद्भुत है। हमें उन्हें भारत रत्न से सम्मानित करना चाहिए।'

राष्ट्रपति जी का आदेश था तो पंत जी गोरखपुर में भाईजी के पास पहुंच गए। भाईजी ने बहुत सम्मान के साथ बैठाया। पंत जी ने भाईजी को राष्ट्रपति जी का पत्र दिया। पंत जी सोच रहे थे कि देखते हैं, अब भाईजी की प्रतिक्रिया क्या होती है? भारत रत्न जिसे मिलता है, उसके लिए कैसे क्या व्यवस्था की जाएगी?

पंत जी ये सारी बातें सोच रहे थे, लेकिन पत्र पढ़कर भाईजी ने पत्र को उसी लिफाफे में रखा और पंत जी के सामने हाथ जोड़कर कहा, 'आप भारत के गृहमंत्री हैं, आप सम्मानीय हैं, मेरा एक निवेदन है। भारत के राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू बहुत अच्छे व्यक्ति हैं, मैं उनका बड़ा आदर करता हूं, लेकिन आपने और उन्होंने जो अनुग्रह मुझसे किया है, वह मैं स्वीकार नहीं कर सकता हूं, क्योंकि मेरे लिए उपाधि एक व्याधि है। जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूं, मेरे जो उद्देश्य हैं, उसके लिए ये उपाधि बाधा बन सकती है। ये मेरे निजी विचार हैं। आप ही बताइए मैं व्याधि को मैं कैसे स्वीकार करूं, क्या आप कहेंगे कि मैं बीमार हो जाऊं।'

पंत जी ने लौटकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी को ये बात बताई तो उन्होंने भाईजी को एक पत्र लिखा कि मुझे ये अनुभव हो गया है कि कुछ लोग उपाधियों से ऊंचे होते हैं। उनमे से एक आप हैं।-

सीख - अगर उद्देश्य जनसेवा करने का है तो हमें प्रशंसा, मान-सम्मान, उपाधियों और सरकारी सुविधाओं से बचना चाहिए। कभी-कभी ये बातें अहंकार बढ़ाकर हमें सेवा कार्य से भटका देती हैं।

सुप्रभातम्।

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प के 2022-23 बैच की छात्राओं की पढ़ाई सुचारू रूप से चल रही है। प्रकल्प की बालिकाओं के लिए अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

- 9 मई को बड़ा मंगल के उपलक्ष में हनुमान चालीसा का पाठ हुआ।
- 12 मई को श्रीमती गरिमा जी ने बालिकाओं से जीवन मूल्यों पर चर्चा की।
- 13 मई को परम आदरणीय भाऊराव देवरस जी को उनकी जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।
- 19 मई को बालिकाओं ने डाक्टर सुषमा मिश्रा, श्रीमती रंजना श्रीवास्तव और श्रीमती पूनम के संरक्षण में फिल्म द केरल स्टोरी देखी।
- 29 मई को श्रीमती शुभा जी ने बालिकाओं से परीक्षा में हिन्दी विषय में अधिक अंक लाने की युक्तियों पर चर्चा की।

महामना शिक्षण संस्थान बालक प्रकल्प के बालकों के लिए बने भवन की तरह ही बालिकाओं के लिए बनने वाले भवन का भूमि पूजन कार्यक्रम इस वर्ष फ़रवरी माह में आयोजित हुआ था। अब उसके निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होने वाली है। इस भवन के निर्माण से बालिकाओं के रहने व खाने की उचित व्यवस्था हो सकेगी और उनकी पढ़ाई भी सुनियोजित तरीके से संभव होगी जिसका उनके परिणाम पर अनुकूल असर होगा। प्रकल्प बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को प्रेरित करने को प्रयत्नशील है।

बालिकाओं के लिए बनने वाले भवन का विहंगम दृश्य

योग (इस

प्रवेश परीक्षा बैच - 2023-25

नए बैच के लिए सूचना वेबसाइट के माध्यम से 23 अप्रैल को दी गई थी जिसके अनुसार आवेदन करने की अंतिम तिथि 25 मई थी। कुल 421 आवेदन प्राप्त हुए जिनमें 268 बालक और 153 बालिकाएं थीं। बालकों में 210 बालकों ने IIT JEE के लिए और 58 ने NEET के लिए आवेदन किया था। बालिकाओं में 79 ने IIT JEE के लिए और 74 ने NEET के लिए आवेदन किया था। इन सभी की प्रवेश परीक्षा 4 जून 23 को सरस्वती विद्या मंदिर अलीगंज में हुई है। इसके परीक्षा परिणाम और सफल शिक्षार्थियों की विस्तृत जानकारी अगले अंक में प्रकाशित होगी।

पावन स्मृति - जून

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूषों का नाम
3 जून 1706	जन्म-तिथि	बुन्देलखण्ड का शेर : छत्रसाल
8 जून 1716	बलिदान दिवस	बन्दा बैरागी का बलिदान
10 जून 2010	पुण्य तिथि	मजदूर हित को समर्पित राजेश्वर दयाल जी
12 जून 1976	पुण्य तिथि	महायोगी : गोपीनाथ कविराज
12 जून 1858	बलिदान दिवस	महासमर के योद्धा बाबा साहब नरगुन्दकर
13 जून 1857	बलिदान दिवस	ओबरी युद्ध का नायक राजा बलभद्र सिंह चहलारी
14 जून 1915	जन्म-दिवस	प्रसिद्धि से दूर : भाऊसाहब भुस्कुटे
16 जून 1918	बलिदान दिवस	नलिनीकान्त बागची का बलिदान
17 जून 1858	बलिदान दिवस	झाँसी की रानी का अमर बलिदान
17 जून 1674	पुण्य-तिथि	शिवाजी की निर्माता : माँ जीजाबाई
18 जून 1576	इतिहास-स्मृति	हल्दीघाटी का महासमर
20 जून 1915	जन्म-तिथि	वन्य जीवन के चित्रकार: रामेश बेदी
21 जून 1940	पुण्य तिथि	संघ संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार
22 जून 2005	पुण्य तिथि	कुशल संगठन : सुन्दर सिंह भंडारी
22 जून 1858	बलिदान दिवस	नगर सेठ अमरचन्द बाँठिया को फाँसी
23 जून 1953	बलिदान दिवस	डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान
24 जून 1881	पुण्य तिथि	ओम जय जगदीश हरे-लेखक-श्रद्धाराम फिल्लौरी
25 जून 1857	इतिहास-स्मृति	अंग्रेज सेना का समर्पण
26 जून 1838	जन्म-तिथि	वन्देमातरम् के गायक बंकिमचन्द्र चटर्जी
27 जून 1963	पुण्य तिथि	कर्तव्य कठोर : दादाराव परमार्थ
28 जून 1547	जन्म-तिथि	अद्भुत दानी : भामाशाह
29 जून 1965	पुण्य तिथि	स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती

महामहोपाध्याय गोपीनाथ

जन्म 7 सितंबर, 1887 - मृत्यु 12 जून 1976

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज का जन्म पूर्वी बंगाल, अब बांग्लादेश के ढाका जिले के धामराय गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता की मृत्यु उनके इकलौते बच्चे के जन्म से पांच महीने पहले हुई थी। उस बालक के जन्म के पश्चात उसका नाम परिवार के देवता के नाम पर गोपीनाथ रखा गया, दूसरे गांव में एक रिश्तेदार की देखभाल में लाया गया। गोपीनाथ ने अपनी प्राथमिक शिक्षा छठी कक्षा तक धामराय और कंथालिया गाँवों के स्कूलों में की थी, जहाँ से वे ढाका शहर गए और जुबली स्कूल में दाखिल हुए। उन्होंने वहां सातवीं से दसवीं कक्षा तक अध्ययन किया। 1905 में 18 वर्ष की आयु में कलकत्ता

विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की।

कविराज संस्कृत के विद्वान और महान दार्शनिक थे। वे सारस्वत-साधना के अद्वितीय विद्वान और तंत्र साधना के सिद्ध योगी के रूप में भी ख्यात थे। 1914 में पुस्तकालयाध्यक्ष से आरम्भ करते हुए वे 1923 से 1937 तक वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्राचार्य रहे। अपने व्यापक अध्ययन और विलक्षण भक्ति के द्वारा अपने शिक्षकों का सराहनीय ध्यान आकर्षित किया। अध्यात्मिक क्षेत्र में परमहंस विशुद्धानन्द जी इनके गुरु थे। उन्हें सूफीवाद और ईसाई रहस्यवाद का भी गहन ज्ञान था।

गोपीनाथ कविराज, अपने बाद के वर्षों में, श्री आनंदमयी माँ के प्रबल भक्त बन गए, जिन्हें वे देवी का अवतार मानते थे। अपनी मृत्यु तक उन्होंने ज्ञान के निःस्वार्थ प्रसार द्वारा चिह्नित संस्कृत छात्रवृत्ति की महान परंपरा को बनाए रखा। अध्यात्म, योग एवं साधना संबंधी उनके बहुत से लेख विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

माँ जीजा बाई

जन्म 12 जनवरी 1598 - मृत्यु 17 जून, 1674

यों तो हर माँ अपनी सन्तान की निर्माता होती है; पर माँ जीजा ने अपने पुत्र शिवाजी के केवल शरीर का ही निर्माण नहीं किया, अपितु उनके मन और बुद्धि को भी इस प्रकार गढ़ा कि वे आगे चलकर भारत में मुगल शासन की चूलें हिलाकर हिन्दू साम्राज्य की स्थापना में सफल हुए। जीजाबाई के मन में यह पीड़ा थी कि उनके पिता और पति दोनों मुस्लिम शासकों की सेवा कर रहे हैं। पर परिस्थिति ऐसी थी कि वह कुछ नहीं कर सकती थीं। जब वह गर्भवती हुईं, तो उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने पुत्र को ऐसे संस्कार देंगी, जिससे वह इस परिस्थिति को बदल सकें। शाह जी प्रायः युद्ध में व्यस्त रहते थे, इसलिए उन्होंने जीजाबाई को शिवनेरी दुर्ग में पहुँचा दिया। वहाँ जीजाबाई ने रामायण और महाभारत के युद्धों की कथाएँ सुनीं। इससे गर्भस्थ बालक पर वीरता के संस्कार पड़े। 19 फरवरी, 1630 को शिवाजी का जन्म हुआ। आगे चलकर शिवाजी ने मुगल राजशाही को परास्त कर 6 जून 1674 को भारत में हिन्दू पद पादशाही की स्थापना की। जीजाबाई मानो इसी दिन के लिए जीवित थीं। छत्रपति शिवाजी को सिंहासन पर विराजमान देखने के बारहवें दिन उन्होंने आँखें मूँद लीं।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

जन्म 19 नवम्बर 1835 - मृत्यु 18 जून, 1858

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा; पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

वाराणसी में जन्मी रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही मनु को घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना

जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधरराव से हो गया। विवाह के बाद वह रानी लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। उनके चार महीने के पुत्र की मृत्यु हो गई। जब वह 18 वर्ष की ही थीं, तब राजा गंगाधर राव का देहान्त हो गया। उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था। पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों ने दामोदर राव को मान्यता देने से मना कर दिया और झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी - "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।"

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से 50 कि.मी दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया, पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया। उसके पास साठ हजार की सेना थी। रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये। इधर देश में जगह-जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में स्थित सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन-चुनकर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया।

रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली। पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे। जनरल ह्यूरोज़ ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया। रानी अपने पुत्र दामोदर को पीठ पर बाँधकर 22 मार्च, 1858 को युद्धक्षेत्र में उतर गईं। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा, पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके। नौवें दिन अपने बीस हजार सैनिकों के साथ तात्या टोपे रानी की सहायता को आ गये, पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी से वह ग्वालियर आयीं। वहाँ 18 जून, 1858 को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी। रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। सुभद्रा कुमारी चौहान के गीत ''खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी'' ने झांसी की रानी को सदा के लिए अमर कर दिया।

समर्थ भारत प्रकल्प की जानकारी

		मई 2023 में पूर्ण			वर्ष 2023 - 24 (अप्रैल से मई)				
क्र.	ट्रेनिंग का नाम	बैच	प्रशिक्षक	प्रशिक्षार्थी	बैच	प्रशिक्षक	प्रशिक्षार्थी	स्वरोजगार	रोजगार
1	ए.सी. - फ्रिज रिपेयरिंग	1	1	23	2	2	39		9
2	ब्यूटिशियन	1	1	21	1	1	21		2
3	हेयर स्टाइलिस्ट								
4	जी.एस. टी. – टैली								
5	मोबाईल रिपेयरिंग								
6	सिलाई – कटाई	1	1	6	1	1	6		2
	कुल योग	**3**	**3**	**50**	**4**	**4**	**66**	**0**	**13**

विश्राम सदनों में मई-2023 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU लखनऊ	विश्राम सदन दिल्ली	IGIMS पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			4		13	17
2	हिमाचल प्रदेश			2		8	10
3	पंजाब/चंडीगढ़	4		1	2	9	16
4	हरियाणा			29		426	455
5	दिल्ली	12	1	14		178	205
6	उत्तराखंड	3	5	17		36	61
7	उत्तर प्रदेश	1731	956	179		700	3566
8	बिहार	1079	52	270	2300	112	3813
9	झारखण्ड	71	11	33	70	19	204
10	सिक्किम	3					3
11	नागालैंड						
12	असम			8	1	3	12
13	मणिपुर /मिजोरम						
14	अरुणाचल प्रदेश					1	1
15	त्रिपुरा			1			1
16	मेघालय			3			3
17	प. बंगाल	11		31	10	4	56
18	ओडिशा/अंदमान	5		6			11
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना			3			3
20	तमिलनाडु/पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक						
22	केरल			1			1
23	महाराष्ट्र /गोवा/दमन	7		6			13
24	मध्य प्रदेश	56	10	45		23	134
25	छत्तीसगढ़	3		2		1	6
26	गुजरात	4		6		1	11
27	राजस्थान		2	24	3	45	74
पड़ोसी देश							
1	नेपाल	33		10	20	3	66
2	बांग्लादेश			4		1	5
3	अन्य देश						
इस मास का योग		3022	1037	699	2406	1583	8747
योग (अप्रैल 23 - मार्च 24)		5943	2170	1426	4399	2880	16818
इस मास में प्रतिदिन की औसत उपस्थिति		377	140	280	247	551	1595

RNIN-UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	मई	अप्रैल 23 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	0	0
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	110	233
गोपालपुरा	9	25
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	35	89
अम्बेडकर नगर	0	0
माधव सेवा आश्रम	27	45
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	473	1029
होम्योपैथिक	355	708
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	270	530
कुल लाभान्वित रोगी	1279	2659

नेत्र चिकित्सा (मई 2023)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2023 से)
नेत्र परीक्षण	601	2861	6786
चश्मा वितरण	241	2242	4307
मोतियाबिंद पहचान	9	174	321
मोतियाबिंद सर्जरी	9	0	14
Fundus Test	141	0	277
OCT Test	15	0	46
पैथोलॉजी	72	0	139

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन व सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू., लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
विश्राम सदन, एम्स, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
विश्राम सदन, आई.जी.आई.एम.एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	डॉ अनिमा जम्वाल	9839582266
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007

बुक पोस्ट
छपा-साहित्य

सेवा में,

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी